वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

फरवरी – 2020

- मोक्ष और विकास का मार्ग
- पिता का सुन्दर रूप
- माता पिता और सन्तान के सम्बन्ध में
- मां का रूप
- मल्लेका में माता – पिता सन्तान ब्रत और सत्संग
- जीवन प्रसंग
- शुभ संग्राम
- तालिका 2020

सत्संग में बैठकर

मैं यहाँ सभाओं में काफी समय के बाद शामिल हुआ हूँ। सभाओं में बहुत अच्छा फील होता रहा। इतना समय सभाओं में न आने का भी महसूस होता रहा। अनजाने में ही गुरू महाराज के जो प्रभाव हृदय में पड़ गये उनसे आज तक बहुत भला हुआ है। पहले ये आदत होती थी कि किसी भी जानकार अथवा रिश्तेदार के घर जाता था तो वहाँ जरूर उनके यहाँ जबरदस्ती मेहमान बनकर खान-पान बनवाता व खाता था। किसी की तकलीफ या अपना उन पर बोझ बनना महसूस नहीं होता था। दूसरों से सेवा पाना अपना हक समझता था। अब काफी अरसे से उच्च प्रभावों से इस गति में बदलाव आया है। अब किसी भी बहन, बेटी अथवा किसी जानकार या रिश्तेदार से सेवा पाकर महसूस करता हूँ, गुरू के प्रभावों से अब किसी के घर या तो खाली हाथ जाता नहीं, या कुछ फल आदि ले जाता हूँ या उन्हें उनकी सेवा के बदले बड़ी खुशी व दिल से कुछ यथा योग्य नगदी भेंट देकर तृप्ति पाता हूँ। गुरू के प्रभावों से कुछ बुराईयां व कई प्रकार के नशों से बचने में मजबूती भी आयी है। हालांकि अपने जीवन को मैं पूर्ण साफ और सुरक्षित महसूस नहीं करता हूँ परन्तु गुरू दर से दूर होकर तो घाटा ही है।

गुरू के उच्च असरों से ईमानदारी के भाव को भी बल मिला है, जिससे मेरा व्यवहार काफी हद तक औरों के मुकाबले साफ व सच्चा देखता हूँ जिसके कारण मैं जहाँ काम करता हूँ वह अपनी कई जिम्मेवारियाँ मेरे व्यवहार को देखकर मुझे सौंप देते हैं। मेरी सर्विस में हिसाब करने में भी मालिक मेरे पर और साथी कर्मचारियों के मुकाबले ज्यादा विश्वास करते रहे हैं जबकि मेरे साथियों को मैं मालिक के साथ कई बार झूठ व बेईमानी आदि के व्यवहार के कारण उन्हें उनका दण्ड भुगतते भी देखता हूँ।

गुरू दर पर आकर जहाँ पाई हुई बरकतों से दिल बहुत धन्यवाद के भावों से भर रहा था वहाँ सभाओं के उच्च असरों में अपनी एक बेईमानी की घटना उभर उभर कर सामने आयी। मैं जहाँ काम कर रहा था और मेरे कुछ अच्छे व्यवहार के कारण वह मुझ पर इतना विश्वास करते थे वहीं अपनी नालायकी से अपने साथियों के साथ रहते-रहते उनके प्रभाव में आकर अपने उपकारी, रोजी रोटी देने वाले मालिक से मैने भी झूठ मारकर एक रकम करीब 250/- रूपये की ज्यादा लिख दी, उन्होंने सदा की भांति मुझ पर भरोसा जताया व मुझे पैसे दे दिए। (सभाओं में बैठकर जहाँ और देव ज्योति को पाकर अपनी गलतियों के लिए रो-रोकर माफी माँग रहे थे) वहाँ मुझे भी अपना अपने मालिक के सम्बन्ध में विश्वासघाती रूप नज़र आकर बहुत शर्म और दुख फील हो रहा था। वहीं प्रभावों में बैठे-2 मैंने यह प्रण किया कि मैं अपने उसी उपकारी मालिक के पास जाकर (हालांकि वह करीब 250-30 किलोमीटर दूर शहर में रहते हैं) उन्हें वह बेईमानी से लिए हुए रूपये लौटाऊँगा व माफी भी मागूँगा।

-मोहन लाल

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 2
फरवरी – 2020
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मोक्ष और विकास का मार्ग

हमारी धर्म समाज में एक बहुत कीमती वा अर्थ प्रधान शब्द प्रचलित है: –

"उच्च जीवन के उच्च ही फल हैं, वृथा प्रचार सभी निष्फल हैं"।

यह शब्द सुनहरी शब्दों में लिखे जाने के योग्य हैं और अपने हृदय में हर धर्म अभिलाषी के लिए, गहरा उतारने की आवश्यकता है। यह शब्द संकेत देते हैं कि मुख्य वा असल वस्तु उच्च जीवन है, इसको कभी और किसी कीमत पर भी हृदय से नहीं उतारना चाहिए। यदि उच्च जीवन है तो प्रचार अपने आप होगा, उसके ठोस फल निकलेंगें और प्रचार वृथा नहीं जाएगा।

गुरू महाराज ने बार बार हमारा ध्यान इस सच्चाई की ओर फेरा है, उन्होंने फरमाया है: –

"तुम जीवन लाभ करके ही किसी को जीवन दे सकते हो"

"यदि तुम स्वंय नीच गतियों से नहीं बच सकते, तो तुम औरों को भी नीच गतियों से नहीं बचा सकते।"

"जब तक कर्मचारी का अपना जीवन न बनें, तब तक वह किसी और का जीवन नहीं बचा सकता।"

"बनाने का काम पहले करने की अवश्यकता है, पहले कोई खुद बनें, फिर बनाने का काम करें।"

उच्च जीवन के लिए मोक्ष और विकास की तीव्र इच्छा और उसके लिए संग्राम की अवश्यकता है। इस इच्छा और संग्राम के बिना हमारे प्रचार, हमारे सत्संग सभाएं, हमारे अधिवेशन और शिविर सब निष्फल हैं। सब फोके फायरों के समान है। उनका कोई उच्च फल नहीं निकलता। कागजी फूल कभी सुगन्ध नहीं देते।

इसलिए हमारे लिए यह अति अवश्यक है कि हम देखें कि हम उच्च जीवन अकांक्षी बन गए हैं? क्या हमारे भीतर आत्म–हित अभिलाषा जाग गई है? क्या हमारा कोई मोक्ष और विकास का संग्राम आरम्भ हो गया है, या हम अपना निज का साधन करके, कुछ महिमा के गीत गाकर, किसी अंश कभी प्रभावित होकर, कभी कुछ महिमा देखकर और कभी कुछ अपनी कमी देखकर ही सन्तुष्ट हैं। इसी को अपना हित का मार्ग समझकर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसी अवस्था द्वारा मोक्ष और विकास की प्राप्ति की ही आशा कर रहे हैं।

हमें यह बहुत अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि मोक्ष और विकास का विशेष निरधारित मार्ग है। उसको जानना और पूरा करना अति अवश्यक है। उस मार्ग को जाने बिना कोई जन उच्च जीवन प्राप्त नहीं कर सकता।

सबसे पहले अवश्यकता है अपने अंह को

प्रकृत रूप में देखने, जानने और उससे विरत होने का संग्राम करने की। अंह के काफी मात्रा में घटने वा नष्ट हुए बिना किसी भी मनुष्य को देवात्मा के आद्वतीय देव प्रभावों का गुजारे योग्य मिलना भी असम्भव है। मनुष्य के लिए देव प्रभावों की प्राप्ति के मार्ग में अंह पहाड़ जितनी अड़चन है। इसका दमन होना वा नष्ट होना अवश्यक है। इसके बिना देव ज्योति के पाने का सिलसिला चल ही नहीं सकता।

देवात्मा की ज्योति बराबर पाए बिना मनुष्य को सारे नीच अनुरागों का प्रकृत ज्ञान नहीं हो सकता।

इसलिए प्रत्येक सच्चे जीवन अभिलाषी के लिए अपने साधनों में गुरू महाराज की ज्योति में अपनी कमीयां, नीचताएं, दुष्टताएं अपने अपराधों को देखना और हररोज़ घन्टा भर उनको लिखना अवश्यक है। जो ऐसा साधन कई वर्षो तक निरन्तर जारी नहीं रख सकता, वह अपने अंह जात घमंड और घृणा के प्रकृत रूप में दर्शन भी नहीं कर सकता। ऐसा मनुष्य मोक्ष और विकास तो एक तरफ वह अपने अति भयानक अंह के प्रकृत रूप में दर्शन ही नहीं कर सकता। वह इस पक्ष में अन्धा ही कबर में चला जाता है। अपने अंह को देखना वा जानना हम धर्म अभिलाषी जन के लिए अवश्यक है। 4–6 महीने अपनी कमीयां वा नीचताएं लिखते रहकर कुछ कुछ रोशनी मिलने लगती है, जो हमें अपने महा रोग वा कोढ़ का ज्ञान दे सकती है और इससे मुक्त होने का फिक़र पैदा कर सकती है।

गुरू महाराज ने इस पक्ष में भी जगह जगह यह रोशनी प्रदान की है। उन्होंने फरमाया है :–

"याद रखो, 'मैं' को मारे बिना तुम्हारा कुछ नहीं बन सकेगा।"

गुरू चरणों में आकर, उनके आद्वतीय मिशन का अंग बनकर, हमें अपनी 'मैं' को मारना अति अवश्यक है। हमारी "मैं" पहाड़ की तरह हमारे हित के मार्ग में अड़चन बनी हुई है।

उपरोक्त अपनी नीचता के विषय में साधन करते करते हमें देव प्रभाव मिलने लगते हैं, जो हमें हमारा घंमड और नीच घृणा दिखाते हैं और धीरे धीरे उनसे मुक्त करते हैं। अपने अंह का सच्चा बोध और उसका सच्चा खौफ और दुख हमें एक नई दुनियां में जन्म देता है, हम इस बोध के दाता के महा ऋणी अनुभव करते हैं और धन्य धन्य होते रहते हैं।

उपरोक्त शुभ संग्राम के अर्थात अपनी "मैं" को मारने के संग्राम के लगातार वर्ष दो वर्ष जारी रखने से धीरे धीरे नेचर का आत्मिक जगत का महान नियम पूरा होने लगता है, वह यह कि अधिकारी मनुष्य को देवात्मा के लासानी देवरूप की अनोखी झलक दिखाई देने लगती है। इस सम्बन्ध में देवात्मा ने सिद्धान्त दर्पण में विशेष रूप से लिखा हैं:–

"अधिकारी और अनाधिकारी आत्मा" इस हैडिंग से स्पष्ट किया है कि ज्यों ज्यों अंह का अधिकार घटता जाता है, वैसे–वैसे मनुष्य देव प्रभावों की प्राप्ति का अधिक अधिकारी बनता जाता है। अंह के अधिकार के विशेष सीमा में घटने से अधिकारी जनों को ऐसी विलक्षण ज्योति या प्रभावों का दान मिलता है जो उसे देव रूप की अति सुन्दर और अति आकर्षिणीय झलक दिखानी शुरू करता है और इस झलक को अधिक से अधिक देखने के योग्य होना और उसके आगे आपार दीनता से नत मस्तक होना आरम्भ हो जाता है। यही देवात्मा की सच्ची पूजा है। इससे अधिकारी मनुष्य के भीतर अपनी योग्यता के अनुसार देवात्मा के महा विशाल और महान रूप के लिए अटल विश्वास, श्रद्धा, कृतज्ञता के भाव पैदा होने लगते हैं। इनके बढ़ने से अधिकारी आत्मा को देवात्मा के जोरदार देव प्रभावों की प्राप्ति के साथ उनका रूप अति आकर्षणीय दिखाई देने लगता है, जिससे अधिकारी आत्मा झुक

झुक कर उनके साथ जुड़ा हुआ अनुभव करता है। कभी बिछड़ना नहीं चाहता। इस अवस्था में पहुंचकर इन्सान को इतने प्रभाव मिलते हैं कि वह अपने अंह अनुराग, काम अनुराग, धन सम्बन्धी अनुराग, लोभ लालच, स्वार्थ अनुराग और मोह लालसा आदि से मुक्त होने की सच्ची इच्छा महसूस करता है। ज्यों–ज्यों अधिकारी आत्मा देवात्मा के महा आर्कषणीय रूप को देख देखकर रोज रोज विस्मित होता है, त्यों–त्यों उसको उपरोक्त नीच अनुरागों से अपने आप मोक्ष प्राप्त होती जाती है और देवात्मा के साथ जोड़ने वाले सर्वोच्च भावों का विकास होता जाता है। स्वार्थ के नाश और परोपकार धीरे–धीरे विकसित होते जाते हैं। अधिकारी मनुष्यात्मा का पूर्ण जीवन सफलता के र्मग पर अडिग पड़ जाता है और अकसर धन्य–धन्य रहता है।

ऐसा अधिकारी जन जो स्वंय मोक्ष और विकास का राही बन जाता है, वह जो प्रचार आदि का संग्राम करता है वह पूर्ण निष्फल नहीं जाता।

काश! हम अधिक से अधिक संख्या में उक्त मार्ग को पहचान सकें और उसको अपना कर अपना और दूसरों का हित कर सकें।

पिता का सुन्दर रूप

बेशक मां का स्थान बच्चे के लिए सबसे महत्वपूर्ण है, पर बच्चों की परवरिश में पिता के योगदान को भी कम करके नहीं आंका जा सकता। बच्चे में माता के साथ पिता का अंश भी जुड़ा हुआ होता है। बच्चे का जन्म जिस प्रकार मां को मां का दर्जा देता है, उसकी ममता उमड़ती है, उसी प्रकार पिता का दर्जा पाकर पिता भी गर्वित अनुभव करता है। फिर माता पिता दोनों ही उस मासूम की पालना में जुट जाते हैं। जहां मां उसे अपना दूध पिलाकर, उसको बड़ा होते देखकर खुशी से फूली नहीं समाती, पिता खून पसीना बहाकर धन कमाकर बच्चों की हर ख्वाहिश को पूरा करता है। जिन बच्चों के सिर पर पिता नहीं रहते, वह इस घाटे को अनुभव कर सकते हैं।

बच्चे के थोड़ा बड़े होने पर उसके साथ खेलना, उसको छाती पर लिटाना, उसे सुख पहुंचाता है, माता पिता दोनों के बीच सोकर बच्चा सुरक्षित अनुभव करता है। थोड़ा और बड़ा होने पर बच्चे को साईकल सिखाना, उसको अच्छे बुरे की नसीहत देना, यदि कोई लड़ाई झगड़ा हो जाए तो बच्चे के साथ सुरक्षा कवच बन कर खड़े होना, यह एक पिता ही कर सकता है। क्योंकि जिन बच्चों के सिर से पिता का साया उठ जाता है, उनकी माताऐं अकसर कहती सुनी जाती हैं कि बेटा अगर कोई बाहर झगड़ा हो जाए, तो चुपचाप घर आ जाना, तेरे सिर पर बाप नहीं जो तुम्हारे साथ खड़ा होगा। इससे कई बार बच्चे भीरू बन जाते हैं। उनका आत्म विश्वास कम हो जाता है। पिता का साया बच्चे के सस. तवनदक विकास के लिए अति आवश्यक है। पिता का दुनियां का अनुभव और साधारण ज्ञान अक्सर माताओं से अधिक होता है, इसलिए बच्चों के साथ वार्तालाप में पिता अपना ज्ञान बच्चों को देता है। अपने दुनियां के अनुभव बताकर दुनियां में आने वाली कठिनाईयों से सुचेत करता है।

बच्चों का कैरियर बनाने में पिता का योगदान बहुत महत्वपूर्ण होता है। मां का अथाह प्यार और पिता

की परिपक्व सोच और हनपकंदबम बच्चे के सर्व्वांग विकास के लिए अवश्यक है। पिता बच्चों के लिए धन जुटाने में कितनी कठिनाईयों में से गुज़रता एक मध्य–वर्गिय परिवार ही जानता है।

कोई माता पिता बच्चों से दूर रहना नहीं चाहता, मेरे सामने बहुत से उदाहरण हैं कि जहां घर की सुख सुविधाएं छोड़कर पिता विदेश चले गए। सालों घर से बाहर रहे, साल में एक आध बार आए और फिर उस कठिनाई और बच्चों और पत्नी से वियोग की जिन्दगी जीने के लिए विदेश चले गए।

दो घटनाएं मेरी आखों देखी हैं। एक परिवार से हमारे अच्छे सम्बन्ध थे। उनकी बहुत खूबसूरत लड़की थी, जिसकी शादी हो गई और 4 – 5 वर्ष बाद ही उनके पति यह सोचकर कि वह अपनी कमाई से बच्चों का अच्छा भविष्य नहीं दे सकते, वह विदेश चले गए। वहां से जितनी कमाई थी, बच्चों के लिए भेजते रहे, बच्चों को वह सब कुछ दिया, जो यहां रहते वह नहीं दे सकते थे। पूरी जवानी की उमर उन्होंने अकेलेपन में काट दी। खाने का सही प्रबन्ध न होने पर शूगर और ब्लड़प्रैशर के मरीज़ बन गए। बच्चे जवान हो गए, लड़के को बहुत हाई कलास स्कूल के होस्टल में डाला, परन्तु जो वह चाहते थे, वह बच्चा न बना, उनको बहुत सदमा लगा, इतने में उनको इजाज़त मिल गई और उन्होंने पत्नी और बच्चों को अमरीका बुला लिया। मैं तब उनके पास वहां गई थी। वहां पर भी वह लड़के को लेकर परेशान थे। लड़के की रत्ती भर भी एहसास नहीं था कि उसके पिता ने अपनी जवानी, अपनी सेहत उन पर कुर्बान कर दी है। बहुत नेक इन्सान थे। लड़की की उमर बड़ी हो गई थी, वह साथ न जा सकी, उसके अपने से सब तरह से घटिया दर्जे के लड़के से शादी कर ली, वह भी उन्हें गहरा सदमा लगा। उन्होंने चण्डीगढ़ में अपनी एक कोठी बना ली और मुझे बताया कि बहन जी बस लड़के की शादी करके हम पति पत्नी चण्डीगढ़ रहेंगे। एक मंजिल किराए पर दे देंगे और हमारी दोनों की पैन्शन होगी, अब हम इक्ट्ठे जीना चाहते हैं। लड़के की शादी करने चण्डीगढ़ आए , इतनी भागदौड़ की कि शादी से कुछ दिन पहले ही हर्ट अटैक से मृत्यु हो गई। यह एक पिता की कहानी नहीं, एक – 2 पिता अपने रात दिन के सुख चैन खो देता है, ओवर टाईम करता है ताकि वह अपने बच्चों की सुख सुविधाएं दे सके, परन्तु सधारणत: बच्चे उसकी कदर नहीं करते, उल्टा उनकी मांगे बढ़ती जाती हैं और माता पिता निराशा का जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

एक और पिता की जिन्दा उदाहरण मेरे सामने है। वह अच्छी जमीन के मालिक थे, परन्तु बच्चों को शहर में बेहतर जिन्दगी मिल सकती है, इसलिए शहर में आकर रहने लगे। कुछ ऐसे हालात हुए कि जिस कारोबार के लिए वह ज़मीन बेची थी, वह न चल सका, आखिर वह किसी प्रकार किसी कंपनी की सहायता से इंग्लैंड चले गए। वहां जाकर वह ज़मीन का मालिक अकेला, कम पढ़ा लिखा नौजवान मजदूरी करने लगा। उसके हाथों और पैरों में छाले पड़ जाते, पट्टिया बांधकर वह काम करता और अपना कम से कम खर्चा करके, सारी कमाई बच्चों को भेज देता। उसकी कुर्बानी को देखकर दिल पिघल जाता। फिर किसी मेहरबान ने सहायता की और कुछ बेहतर काम उन्हें दे दिया, वहां बिमार होते, कई बार ऐसा हुआ, वह कष्ट सहते रहते, परन्तु डाक्टर के पास न जाते कि रूपये खर्च होंगे, क्योंकि वह वहां के नागरिक तो थे नहीं। उनकी कुर्बानी से उनके बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़ गए, अब वह मजजसमक हैं। परन्तु सालों उस अकेलेपन ने उनको कमचतमेपवद दे दिया, अब सब कुछ होते हुए भी निराशा से घिरे रहते हैं। अपनी सारी जवानी बच्चों पर वार दी, यह है पिता का रूप प।

मैं अपने पिता को जब याद करती हूं तो बेइख्तियार उनके चरणों में झुक जाती हूं। उन्होंने 70 वर्ष पहले अपनी सैकड़ों रूपये की डाक्टरी की प्रैक्टस छोड़ी, गुरू के दर के शैदाई थे, उनके मिशन में ज़िन्दगी भेंट कर दी और परिवार के लिए यू.पी में एक बहुत उपकारी के कहने पर उनके सम्बन्धी के साथ ज़मीन ले ली। परन्तु 2 – 4 वर्ष में उन्होंने ज़मीन पर इतना कर्ज़ा कर दिया कि मजबूरन उन्हें गुरू का काम छोड़कर यू. पी. जाना पड़ा। जाते हुए वह बिलख बिलख कर रोते थे। परन्तु हम बच्चों के लिए उन्होंने यह कुर्बानी दी। वहां जाकर जो उन्हें संघर्ष करना पड़ा, जिस प्रकार रात को दमें का दौरा पड़ता, दवाईयां लेकर सुबह फिर कोई न कोई काम शहर जाना पड़ता।। यह सच्च है कि उनके वा मेरी माता के अनथक संग्राम ने हम सब बच्चों को मजजसम कर दिया, परन्तु उन्होंने वहां जान की बाजी लगाई हुई थी, वहां की आबोहवा उनकी बिमारी के प्रतिकूल थी, परन्तु उन्होंने परवाह नहीं की, माता पिता को उस कुर्बानी का फल हम आज भोग रहे हैं। आख़िर हम सब को मजजसम करके वह गुरू दरबार में आ गए और टूट फूट कर सारे गुरू से सम्बन्धित स्थानों पर अनथक सेवा की और हमें भी परसेवा के लिए हमेशा प्रेरित करते थे। एक दिन शाम के समय हमारे घर में आए, मैं सेहन में लेटी हुई थी, वह पूछने लगे कि क्या हुआ बेटा, तो मैंने बताया कि पिता जी मेरी सिर बहुत दर्द कर रहा है, तो वह मेरे सिरहाने बैठ गए और बैठकर मेरा सिर दबाने लगे, ऐसे लगा जैसे उनके प्यार का जादू भरा हाथ था कि कुछ देर बाद मुझे बहुत ठीक अनुभव हुआ, इस स्थान की और उनके इस रूप को मेरे दिल पर गहरी छाप है।

जहां मां का प्यार अनमोल है, वहां पिता का साया एक संरक्षक का है। बहुत सौभाग्यवान हैं वह बच्चे जिनके पास माता पिता बड़ी उमर तक रहते हैं और उनका दुर्भाग्य है जो अपने माता पिता की कदर नहीं करते या इससे भी बढ़कर उन्हें दुख पहुंचाते हैं। परम पूजनीय भगवान को जितना भी धन्यवाद दें थोड़ा है, जिनकी कृपा से हमें और आगे हमारे बच्चों को यह शिक्षा मिली है कि माता पिता का उपकारी रूप कुछ नज़र आता है।

माता पिता के सम्बन्ध मूं यह विशेष साधन के दिन हैं। गुरू महाराज ने कृपा करके हम अबोधियों को एक एक सम्बन्ध को सुधारने के लिए आदेश दिए हैं। उनके उन आदेशों को पढ़कर हमें अपना असल रूप नज़र आ सकता है कि हम कहां खड़े हैं। इन दिनों को सफल करने के लिए हमें अपने माता पिता की सेवाओं, कष्टों और कुर्बानियों को याद करके उनके आगे झुकना चाहिए। उनके उपकारों को अगर लिख सकें तो और भी लाभ हो सकता है। यदि हम में कोई अच्छे गुण विरासत में आए हैं तो वह भी हमारे माता पिता की कृपा से है। मैं तो जब सोचती हूं कि मेरे माता पिता ने किन कष्टों में से गुज़रकर हमें पढ़ा दिया, जिससे एक ओर हम अपने पैरों पर खड़े होने और आत्म सन्मान के साथ जीने के योग्य हुए। यदि पढ़ी हुई न होती तो परम पूजनीय भगवान की अद्वितीया शिक्षा को समझ ही नहीं सकते थे। हमारी एक एक ख्वाहिश को पूरा करने के लिए उन्होंने अपनी ज़रूरतें कम की हैं, शिक्षकों के आगे हाथ बांधे हैं, हमें सन्मान पूर्वक जीने के योग्य बनाया है। हमारी खुशियों में दिल की तह से खुश हुए हैं। दुख में, बिमारी में रातें जागे हैं, क्या क्या संर्घष नहीं किया। एक एक माता पिता ने गरीब होकर, कर्ज़े उठाकर भी बच्चों का भविष्य बनाया है, हमारा शत: शत: प्रणाम है माता पिता को। जिनके माता पिता हैं, वह दिनों में उपकार भरे पत्र लिखें, उन्हें भेंट दें, जो इस दुनियां में नहीं हैं, वह भी उनके उपकारों का स्मरण करके उनके शुभ की कामना करके अपना भला कर सकते हैं।

– सुरजीत बराड़

माता पिता और सन्तान के सम्बन्ध में

भगवान देवात्मा का विशेष उपदेश का कुछ भाग

20 जनवरी सन् 1919 ई. को "मात पिता सन्तान व्रत" के दिन भगवान देवात्मा ने अपने कई पारिवारिक जनों और कुछ कर्मचारियों की सभा में इस सम्बन्ध के विषय में जिस अति हितकर उपदेश का दान दिया, उसका संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया जाता है :-

पूजनीय भगवान ने फ़रमाया, कि जहां तक सन्तान के पालन का सम्बन्ध है, पशु और पक्षी भी अपने बच्चों को पालते हैं। गाय, भैंस, गधी, घोड़ी, चिड़िया आदि जानवर तो पालते ही हैं, परन्तु दूसरे के बच्चों को खा जाने वाले हिंसक पशु शेर, भेड़िया आदि भी यही नहीं, कि अपने बच्चों को मारकर खा नहीं जाते वा उन्हें असहाय अवस्था में छोड़कर मरने नहीं देते, किन्तु वह भी उन्हें और पशुओं की न्याईं ही पालते हैं। परन्तु शोक! और महा शोक!! कि मनुष्य के भीतर कितनी ही वासनाएं इतनी बढ़ गई हैं, कि जो पशुओं में नहीं बढ़ीं; इसलिए मनुष्य अपनी इन बढ़ी हुई वासनाओं के अधीन होकर अपनी सन्तान के पालन में कितनी ही बातें ऐसी करता है, जो केवल यही नहीं कि उसके ओर उसके बच्चों के लिए कोई हितकर फल पैदा नहीं करतीं, किन्तु इसके विरुद्ध दोनों के लिए महा हानिकारक प्रमाणित होती हैं। यथा :-

बहुत से दुकानदार अपने बेटों को कम तोलना, कम नापना और व्यापार में ठगी करना सिखाते हैं, और यदि किसी को अपने मतलब का नहीं पाते, तो ऐसे शब्द कहते हुए सुने जाते हैं, "यह भीख मांगेगा, इसे कमाना नहीं आता।" अर्थात् धोखे से किसी के माल को हर लेना ही कमाई करना है। ओह! किस क़दर घृष्टता और धर्म के पथ से भ्रष्टता!!

कितने ही माता पिता अपने बच्चों को मक्कारी और झूठ बोलना सिखाते हैं। घर में स्वयं मौजूद हैं, परन्तु बाहर से किसी की तरफ से बुलाए जाने पर यदि उससे उन्हें मिलना न हो, तो अपने किसी बेटे या बेटी के द्वारा कहलवा देते हैं, कि वह बाहर गए हुए हैं।

हज़ारों और लाखों माता पिता अपनी सन्तान के मोह बन्धन में ग्रस्त हो जाते हैं। यह वह महा भयानक रोग है, कि जिस के कारण उन्हें आप और उनकी सन्तान को नाना प्रकार के क्लेशों और मुसीबतों का भागी बनना पड़ता है।

पशु किसी ऐसे मोह से बंधे हुए नहीं पाए जाते। अपने बच्चों की असहाय अवस्था में उनकी सहाय करते हुए और उन्हें पालते हुए अवश्य देखे जाते हैं, परन्तु ज्यूं ही वह चरने चुगने के योग्य हुए, फिर उनका पीछा करते हुए नहीं देखे जाते। इसके विपरीत मनुष्य सारी उमर मरते दम तक मोह के बन्धन में बन्धा हुआ अपनी सन्तान के ही पीछे मारा-मारा फिरता देखा जाता है, और उसका वियोग किसी प्रकार भी सहन नहीं कर सकता। कितनी ही माताएं अपने बच्चों से गालियां खाकर, मारे जाकर भी उनके ही पीछे मारी मारी फिरती रहती हैं। कितनी ही स्त्रियां सन्तान के मोह के कारण अपने पतियों से भी बिगड़ बैठती हैं, और उन में अन्मेल पैदा हो जाता है। मां से यह सहा ही नहीं जाता, कि उसके बेटे की अनुचित से अनुचित क्रिया पर बाप की ओर से भी कोई रोक टोक की जाए। एक तरफ बाप बराबर अपने बेटे से किसी विषय में हानि होती हुई देख रहा है, और उसके रोके बिना रह नहीं सकता, दूसरी ओर मां मोह से अन्धी होने के कारण यह सहन नहीं कर सकती।

परिणाम यह होता है, कि घर में क्लेश रहने लगता है। कितने ही माता पिता अपने जवान जवान लड़कों से नाना प्रकार के दुर्व्यवहार सहकर और दुखी होकर भी उन्हें कुछ कह नहीं सकते और अपनी गाढ़ कमाई से उनके अनुचित खर्चों को पूरा करने के लिए विवश होते हैं। मोह में इतने ग्रस्त हैं, कि लड़के की इस प्रकार की धमकी से कि "मैं घर से निकल जाऊंगा" उनके सामने अन्धेरा छा जाता है। कितने ही माता पिता लड़कों के मर जाने पर सारी आयु के लिए रोगी बन जाते हैं। उनकी जुदाई का ग़म इस क़दर छा जाता है, कि वह काम काज करने के योग्य ही नहीं रहते, और रोज़गार से हाथ धो बैठते हैं। हां, कितने ही सिर फोड़ फोड़ कर वा ग़म में घुल घुल कर इस दुनिया से ही कूच कर जाते हैं। ओह! मोह का कैसा भयानक परिणाम!!

अब एक ओर जहां माता पिता अपना तन, मन, धन सब कुछ अपनी सन्तान के लिए अर्पण करते हुए दिखाई देते हैं, और उनके लिए हज़ारों मुसीबतें झेलते और दिक्क़तें उठाते और सदमे खा कर भी उन्हीं के पीछे फिरते देखे जाते हैं, वहां दूसरी ओर सन्तान का क्या हाल है? उनके भीतर साधारणत: अपने माता पिता के लिए ऐसा कोई भाव नहीं पाया जाता। छोटे बच्चों का तो कहना ही क्या है, वह तो माता पिता की सुनते ही नहीं। माताएं चिल्लाती ही रह जाती हैं। परन्तु बड़े होकर भी क्या लड़के और क्या लड़कियां भी स्वार्थ के पुतले बने हुए देखे जाते हैं। अपनी रुचियों की तृप्ति के लिए माता पिता से जो कुछ भी मिल जाए उसे ऐंठ लेना चाहते हैं, और यदि उनकी किसी अनुचित क्रिया में कोई रोक टोक की जाए, तो शत्रु का रूप धारण कर लेते हैं। यहां तक कि माता पिता की ही धन सम्पत्ति पर अधिकार लाभ करने के लिए और माता पिता को उसमें रोक देखकर कितने ही लड़के उनका घात तक कर देते हैं, और अपने ही जन्म दाता के रक्त में अपने हाथ रंग कर उसकी कमाई हुई सम्पत्ति पर अधिकार कर लेते हैं। ओह! किस क़दर दुष्टता और कैसा हृदय विदारक दृश्य!!!

अब जहां साधारणत: माता पिता और सन्तान का यह हाल हो, वहां भगवान देवात्मा ने अपनी ओर से अपनी सन्तान् को, सदैव ऐसे नीच बन्धनों और वासनाओं से ऊपर होने के कारण, जिस प्रकार से पाला और पोसा है, वह एक निराला दृश्य है। फिर पूजनीय भगवान ने अपनी सन्तान् की ओर संकेत करके फ़रमाया, कि तुम में से कोई यह नहीं कह सकता, कि उसको हमारी तरफ से कभी और किसी अवस्था में भी किसी बुराई की शिक्षा मिली वा बुरे प्रभाव डाले गए वा उसकी उचित पालना और शिक्षा आदि में जहां तक सम्भव था, कोई कमी रखी गई हो। किन्तु इसके विरुद्ध क्या तुम्हारी शारीरिक पालना में, क्या बीमारी आदि के समय सेवा करने में, क्या तुम्हारी मान्सिक शिक्षा में, क्या तुम्हारी अन्य आवश्यकताओं को ठीक तौर से और समय पर पूरा करने में और क्या इन सब से बढ़कर तुम्हारे आत्माओं को नीच भावों से मोक्ष देने और उनमें उच्च भावों के संचार करने में जो कुछ उत्तम से उत्तम हो सकता था, उसके करने का हर समय संग्राम किया गया है। और यह सब कुछ मोह बन्धन से ऊपर वा वासना रहित होकर किया गया है, और हमने कभी भी किसी से किसी प्रकार की कोई आशा नहीं रखी। इसलिए हमें हर समय यह तसल्ली रही है, कि हम ने अपनी ओर से जो कुछ हितकर हो सकता था, वह कर दिया है। हां, केवल सन्तान का ही क्या कहना है, हमने अपनी देव शक्तियों से परिचालित होकर जो जन भी हमारे सम्बन्ध में आया है वा जिस जिस तक भी हमारी पहुंच हुई है, हम ने सदा ही उसकी सबसे बढ़िया भलाई के लिए संग्राम किया है, और इस संग्राम में ऐसे जनों की ओर से नाना प्रकार के घोर दुख और असह्य क्लेश पाकर भी अपनी देव प्रकृति के अनुसार कभी उनकी भलाई की

ओर से मुंह नहीं मोड़ा, जब तक कि ऐसा एक-एकजन स्वयं ही अपनी एक वा दूसरी नीचता के कारण हम से मुंह मोड़ नहीं बैठा। तब एक ओर हमारे इस सम्बन्ध की महिमा को सम्मुख लाओ और दूसरी ओर उसकी तुलना में तुम लोगों का हमारे साथ क्या सन्तान् होने की अवस्था में और क्या सेवक होने की अवस्था में जैसा कुछ सम्बन्ध रहा है और है, उस पर भी विचार करो। हमारी सेहत वा बीमारी, हमारी आवश्यकताओं, हमारी चिन्ताओं वा हमारी तकलीफ़ों, हमारे दुखों वा संग्रामों की ओर से क्या हमारे पारिवारिक और क्या सामाजिक जन जिस प्रकार उदासीन रहे हैं, कि जिन में हमने अपने आपको सदा अकेला अनुभव किया है, उनको छोड़कर, क्या यह सच नहीं, कि एक-एक समय में जब हमने तुम्हारे ही हित के लिए तुम्हें किसी नीचता से निकालने वा तुम में कोई उच्च भाव जाग्रत करने के लिए यत्न और संग्राम किया है, तो केवल यही नहीं, कि तुम ने हमारे संग्राम का साथ नहीं दिया, किन्तु हमें घृणा की है, हमारे विरुद्ध उलटी गति ग्रहण करके, बजाय हितकर्ता के रूप में देखने के, दुश्मन के रूप में देखा है, और हम से फटे और दूर हुए हो। तब तुम सोचो कि तुम हमारे सम्बन्ध में कहां हो? यदि ऐसा विचार का कोई सिलसिला चल सके और तुम्हारे लिए हमारी ज्योति को पाकर अपनी असल अवस्था को सम्मुख लाने और उस अवस्था को बेहतर करने का कोई संग्राम जारी हो सकना सम्भव हो, तो हम हर प्रकार से इस में तुम्हारी सहायता करने के लिए तैयार हैं।

- *उक्त उपदेश के समय श्रीमान जानकी दास जी ने जो नोट लिए थे, यह लेख उनके आधार पर लिखा हुआ है, परन्तु स्वयं भगवान देवात्मा का देखा हुआ नहीं हैं।*

मां का रूप

माता पिता सन्तान यज्ञ समाप्त हो गया है, जब तक यह पत्रिका आप तक पहुँचेगी भाई भग्नि यज्ञ भी समाप्त हो जाएगा। इस संदर्भ में पूजनीय भगवान का बहुत उपयोगी लेख दिया है। नीचे मां के सम्बन्ध में कुछ कविताएं प्रस्तुत करते हैं।

मैं मां को मानता हूं

बचपन में मां कहती थी
बिल्ली रास्ता काटे,
तो बुरा होता है
रुक जाना चाहिए.....

मैं आज भी रुक जाता हूं
कोई बात है जो डरा
देती है मुझे....

यकीन मानो,
मैं पुराने ख्याल वाला नहीं हूं.....
मैं शगुन-अपशगुन को नहीं मानता.....

मैं मां को मानता हूं।
मैं मां को मानता हूं।

दही खाने की आदत मेरी
गई नहीं आज तक...
मां कहती थी
घर से दही खाकर निकलो
तो शुभ होता है....
मैं आज भी हर सुबह दही
खाकर निकलता हूं.....
मैं शगुन-अपशगुन को नहीं मानता....

मैं मां को मानता हूं।
मैं मां को मानता हूं।

यकीन मानों, मैं पुराने ख़्याल वाला नहीं हूं.....
मैं शगुन-अपशगुन को भी नहीं मानता.....

मैं मां को मानता हूं।
मैं मां को मानता हूं।

मैंने भगवान को नहीं देखा जमीं पर
मैंने अल्लाह को भी नहीं देखा
लोग कहते हैं,
नास्तिक हूं मैं
मैं किसी भगवान को नहीं मानता

लेकिन मां को मानता हूं।
मैं मां को मानता हूं।

मां

मुझे ख़बर नहीं जन्नत बड़ी कि मां लेकिन
लोग कहते हैं कि जन्नत बशर के नीचे है

मुझे कढ़े हुए तकिये की क्या जरूरत है
किसी का हाथ अभी मेरे सर के नीचे है

बुजुर्गों का मेरे दिल से अभी तक डर नहीं जाता
कि जब तक जागती रहती है माँ मैं घर नहीं जाता
मोहब्बत मां को भी मक्का-मदीना मान लेती है
मां ये कहती थी कि मोती हैं हमारे आंसू
इसलिए अश्कों का पीना भी बुरा लगता है
शहर के रस्ते हो चाहें गांव की पगडंडियां
मां की उंगली थाम कर चलना मुझे अच्छा लगा
अब भी रौशन हैं तेरी याद से घर के कमरे
रौशनी देता है अब तक तेरा साया मुझको
मेरे चेहरे पे ममता की फ़रावानी चमकती है
मैं बूढ़ा हो रहा हूं फिर भी पेशानी चमकती है।

मां

मां कबीर की साखी जैसी,
तुलसी की चौपाई-सी,
मां मीरा की पदावली-सी,
मां है ललित रुबाई-सी।
मां वेदों की मूल चेतना,
मां गीता की वाणी-सी,
मां त्रिपिटिक के सिद्ध सुक्त-सी,
लोकोक्तर कल्याणी-सी।
मां द्वारे की तुलसी जैसी,
मां बरगद की छाया-सी,
मां कविता को सहज वेदना,
महाकाव्य की काया-सी।
मां अषाढ़ की पहली वर्षा,
सावन की पुरवाई-सी,
मां बसंत की सुरभि सरीखी,
बगिया की अमराई-सी।
मां यमुना की स्याम लहर-सी,
रेवा की गहराई-सी,
मां गंगा की निर्मल धारा,
गोमुख की ऊंचाई-सी।
मां ममता का मानसरोवर,
हिमगिरि-सा विश्वास है,
मां श्रद्धा की आदि शक्ति-सी,
काबा है कैलाश है।
मां धरती की हरी दूब-सी,
मां केशर की क्यारी है,
पूरी सृष्टि निछावर जिस पर,
ऐसी मां हमारी है।
मां की छवि ही न्यारी है।
मां धरती के धैर्य सरीखी,
मां ममता की खान है,
मां की उपमा केवल है,
मां सचमुख भगवान है।

(दैनिक भास्कर से प्रस्तुति)

मल्लेका में माता–पिता सन्तान ब्रत और सत्संग

(10/1/2020 से 13/1/2020)

महोत्सव मुबारक पर ही धर्म सम्बन्धियों को मल्लेका में माता–पिता सन्तान ब्रत सम्बन्धी जानकारी दी गई थी। मल्लेका और केसूपुरा निवासी धर्म सम्बन्धी इस सत्संग की विशेष तैयारी में जुट गए थे। मन्दिर का रंग रोगन, सफाई के बाद वराडे से आगे सीढ़ियों तक फर्श पक्का करके बहुत सुन्दर प्रबन्ध किया गया। मोटर साईकल वा कारें खड़ी करने के लिए निशान लगाए गए। यात्रियों के ठहरने का और खाने का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया गया। इसका प्रबन्ध श्रीमान सुखदेव सिंह जी जोसन के घर किया गया। इस सत्संग से लाभ उठाने के लिए मल्लेका, केसूपुरा, भटिंडा, चण्डीगढ़, पदमपुर, गज सिंहपुर और गंगानगर से धर्म सम्बन्धी पहुँचे। श्रीमान सुखदेव सिंह जी के दो तीन रिश्तेदारों में से सात आठ जन आकर लाभ उठाते रहे।

<u>10.1.2020 शाम 4.00 बजे, पहली सभा :–</u> सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इस सभा में यह ब्यान किया गया कि देव धर्म दूसरे धर्मों से विलक्षण धर्म है। जहां दूसरे धर्मों में बहुत कुछ अज्ञानता और अबोधता का प्रचार है, वहां देव धर्म मनुष्य के सार अस्तित्व आत्मा (जीवनी शक्ति) के विकास वा पतन पर केंद्रित है। आगे बताया गया कि मनुष्य प्रत्येक गति अपनी एक वा दूसरी भाव शक्ति से परिचालत होकर करता है। उसका फल भी उस भाव शक्ति के प्रकृत स्वभाव अनुसार ही होता है। काम सुख अनुराग, धन सुख अनुराग से प्रेरित होकर कैसे मनुष्य अपने लिए दुख और बर्बादी लाता है। जेलों में यातनाएं सहता है। महां अपमान वा विनाश को प्राप्त होता है। इन शक्तियों से बचाने वा उच्च भावों के प्रदान के सच्चे रूप को जानने की आवश्यकता है। गुरू महाराज की शिक्षा में उच्च भावों को आत्मा की जान बताया गया है। इस सभा में लोकल धर्म सम्बन्धियों के ईलावा बाहर से भी 6–7 धर्म सम्बन्धी पहुँच गए थे।

अन्त में श्रीमान मेहर सिंह जी ने अपनी पुरानी शिकार की वा पशु बध की आदत के विषय में बताया। वह वर्षा होने पर हिरणों के पांवो के निशान देखकर उनका शिकार करते थे। बेजुबान, बेकसूरों की हत्या करके ज़ालिम और कातिल बनते थे। वह रो रोकर देव धर्म के कल्याणकारी वातावरण की महिमा महसूस कर रहे थे, जिसमें पापियों को सेवाकारी बनाने के क्रिश्में होते हैं।

<u>11.01.2020 सुबह 9.30 बजे :–</u> यह सभा भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। इस सभा में पाक प्रतिज्ञाओं की महिमा पर चर्चा की गई। जो सेवकी ग्रहण करने के लिए आवश्यक हैं। देव समाज का सेवक बनकर साधारण लड़का भी अपने बज़ुरगों पर उच्च प्रभाव डालता है। उन्हें अपनी नीच गति त्यागने के लिए ज़ोरदार प्रेरणा करके बदल देता है। एक नौजवान की प्रेरणा से उसके एक बर्जुग ने मांसाहार और अण्डों का खाना त्याग दिया। एक बर्जुग अपने लड़के को अफीम से बचाने के लिए धन्यवाद करते रहे। देव धर्म का वातावरण स्त्री जाति के लिए सम्मान का भाव पैदा करता है। और उनके प्रति अपराध करने से रोकता है। यह वातावरण पाप और बुराई के प्रति उच्च घृणा पैदा करने का वातावरण है।

इस सभा के अन्त में श्रीमान मेहर सिंह जी ने बताया कि पहले मैं अपने बच्चों को बुरा समझता था, जब से इस पाक मण्डल से रोशनी मिली है, मुझे अपना पुराना रूप नज़र आया है। मेरी घृणा चली गई है, मैं नफरत से बचकर शान्त रहने लगा हूं। इस

वातावरण ने मुझे मेरा असल, घटिया और पापी रूप दिखाकर मेरी ज़िन्दगी की दिशा बदल दी है। मुझे हर सभा के बाद कृपा करके कुछ समय दिया करो।

11.1.2020, शाम 4.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इसमें बताया गया कि मनुष्य की सारी लीला उसके सम्बन्धों के कारण है। जो धर्म शिक्षा सम्बन्धों को जंजाल कहती है या धर्म के मार्ग में बेड़ियां समझती है, सब सम्बन्धों को मायाजाल प्रचार करती है, वह महां हानिकारक है। मनुष्य को अबोधी, अन्धा वा कठोर बना देती है। हमारी समझ बूझ मानसिक और हार्दिक सम्बन्धों के बिना असम्भव है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि अपने भिन्न भिन्न सम्बन्धों में अपनी सच्ची ज़िमेवारियों को जानना वा पूरा करना ही धर्म है, उन्होंने पूजनीय देवशास्त्र भाग-4 की रचना करके मानवता पर महान उपकार किया है। इस पवित्र ग्रन्थ में कर्तव्य कर्मों और वर्जित कर्मों की अनुपम शिक्षा वा प्रेरणा है। हम उसको पढ़कर विचार द्वारा अपने आत्मा की अर्थात अपने व्यवहारों की सच्ची तस्वीर देख सकते हैं। हम कैसे बेटे, कैसे पिता, कैसे पति, कैसे भाई, कैसी पत्नी, कैसी बहन, कैसे मालिक, कैसे नौकर, कैसे नागरिक हैं, शीशे की तरह इस तस्वीर को देख सकते हैं। यह महान ग्रन्थ हमारी आत्मा के लिए सच्ची दृष्टि वा दिशा प्रदान करता है।

इस सभा में श्रीमान सरताज सिंह जी ने श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के जीवन के विषय में श्रद्धा पूर्वक ब्यान किया कि उन्होंने मोगा के स्कूल में विद्यार्थियों की कैसे शारीरिक, मानसिक वा आत्मिक सेवा करके, उनके भीतर उच्च जीवन पैदा किया। कितने बच्चों की ईमानदारी की घटनाएं ब्यान की, कितने बच्चों के भीतर माता पिता के लिए, सेवा, सम्मान वा हमदर्दी का भाव पैदा किया। अगली सभाओं में भी अपने परिशोध और श्रद्धेय श्रीमान जी की सेवा के और सुन्दर नज़ारे पेश करके हाजरीन का भला किया।

12.10.2020, सुबह 9.00 बजे :- इस सभा में ब्यान किया गया कि यदि मशीनरी को समय पर तेल आदि द्वारा लुबरीकेट न किया जाए, तो वह खुश्क होकर टूट जाती है। उसके कारण बहुत हानि होती है। इसी प्रकार सामाजिक सम्बन्धों को भी लुबरीकेशन की बहुत आवश्यकता है। जैसे मशीनरी की रक्षा करके उसको अधिक से अधिक सेवाकारी बनाया जा सकता है, जैसे चिकनाई उसकी रक्षा करती है, उसकी उमर बढ़ाती है, मानवीय सम्बन्धों में भी श्रद्धा, शुक्रगुज़ारी, हमदर्दी और हानि परिशोध के भाव सम्बन्धों को सुखदाई, मधुर और हितकर, बनाते हैं। सभापति जी ने और भावों के भिन्न शुक्रगुज़ारी के भाव के विषय में बताया। कई शुक्रगुज़ार हृदयों की अवस्था का ब्यान करते हुए बताया कि हमें प्रतिदिन उस गडरिए की तरह अपने प्रकृत रूप को देखकर उपकारियों के दर्शन करने चाहिए। उनके आगे झुकना चाहिए। उनकी सेवा करके उनके ऋण का कुछ परिशोध करना चाहिए। एक लड़की की प्रभावदायक शुक्रगुज़ारी की घटना बताई।

सभा के बाद श्रीमान सरताज सिंह जी ने श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी की मशक द्वारा पानी लाने और पर्वत आश्रम में फूल खिलाने का बहुत सुन्दर दृश्य पेश किया। इस सभा में लगभग 60-65 जन शामिल थे।

12.01.2020, शाम 4.00 बजे :- इस सभा में भी 65-70 जन आए। सभापति जी ने बताया कि जिसे आम भाषा में क्रोध या गुस्सा कहा जाता है, देव समाज की भाषा में उसे नीच घृणा कहा जाता है। यह मनुष्य के लिए बहुत भयानक आग की तरह है। मनुष्य सुख को प्रेम करता है। उसकी इच्छाएं सुख मूलक होती हैं। जो अस्तित्व उसकी सुख मूलक इच्छा

में विघ्न डालता है, उससे वह दूरी वा दुख महसूस करता है। उस दूरी वा नफरत को नीच घृणा कहते हैं। यह मनुष्य को अपनी मात्रा के अनुसार कठोर, उल्टा दृष्टा और पागल बना देती है। मनुष्य के जितने सुख मूलक भाव हैं, वह अपनी तृप्ति ढूढ़ते हैं। धन के प्रेमी की जब किसी जन के द्वारा धन की हानि होती हैं, उसे शत्रु समझने लगता है। उसकी निन्दा करने वा सुनने के लिए मजबूर हो जाता है। उन्होंने नीच घृणा के भयानक परिणामों के बड़े–2 विद्वानों के उदाहरण दिए, इस प्रकार नीच घृणा की घातक तस्वीर पेश की।

कुछ विशेष उच्च आत्माएं इस अग्नि से मुक्त अवस्था रखती हैं, जैसे महात्मा बुद्ध, हज़रत ईसा मसीह, वह विशेष घटनाएं पैदा करती हैं। परम पूजनीय भगवान की शिक्षा वा देव प्रभाव इस रूहानी ज़हर के Antidote हैं। श्रीमान जी ने श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी और श्रद्धेय श्रीमान पी. वी. कनल जी के जीवनों के दृष्टांत पेश किए। उनके जीवन बताते हैं कि वह अपने साथ बुरा करने वाले का भी किस प्रकार हित भावों से उनके शुभ की कामना करते थे। कई जनों ने इस सभा से काफी लाभ उठाया।

13.01.2020, सुबह 9.30 बजे :– भजन, देव स्तोत्र और उसकी भावपूर्ण व्याख्या के बाद जगदीश जी ने श्रद्धा भाव से भरकर भजन का गान किया "अद्वितीय है रूप तुम्हारा जन समाज में हे भगवन"।

इस सभा में 70 के लगभग हाज़री थी। सभापति जी ने माता–पिता क विषय में कुछ बरूान किया, माता पिता के सम्बन्ध में "श्रद्धेय भाजन माता पिता जी, श्रद्धेय भाव करके उपहार" नामक भजन का गान किया। बहुत भी भाव पूर्ण वातावरण भजन के गान से ही बन गया।

फिर सभापति जी ने परम पूजनीय भगवान की सम्बन्ध तत्व की शिक्षा का ब्यान करते हुए माता पिता के जन्म दाता, पालन कर्ता और शिक्षा दाता रूप का हृदय स्पर्षीय शब्दों में ब्यान किया। माननीय श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी की कृतज्ञता से भरकर अपनी दादी की सेवा का सुन्दर उदाहरण पेश किया। यदि कोई सेवक अपने माता पिता के प्रति उचित सम्मान प्रदर्शन नहीं करता तो देवात्मा के देव हृदय पर चोट लगती थी, जैसे श्रीमान झंडा सिंह जी के माता को प्रणाम न करने पर गुरू महाराज अत्यन्त दुखी हुए।

माता का बच्चे को जन्म देना कितनी बड़ी कुर्बानी है। बच्चों को पालने, उनकी पढ़ाई, उनके ईलाज में फरिश्ते माता पिता कहां तक कुर्बान हो जाते हैं। जो माता पिता बच्चों द्वारा सन्तप्त किए जाते हैं। वह दृश्य भगवान को तड़पा देता था। भगवान अपने प्रभाव पहुँचाकर नाशुक्रे बच्चों को शुक्रगुज़ार बना देते हैं। घरों में स्वर्गीय दृश्य पैदा कर देते हैं। कृतज्ञता के उदाहरणों से बहुत सुन्दर वातावरण बन गया।

सभापति जी ने बताया कि इस्लाम धर्म में बताया गया है कि मां के चरणों में जन्नत होती है। प्रोफैसर मोहन सिंह जी ने और अमरीका के राष्ट्रपति ईब्राहिम लिंक ने जो माता पिता को tribute दिया, उसका विस्तार से वर्णन किया। कल्याण के धर्म सम्बन्धी श्रीमान कर्म सिंह जी का माता के प्रति व्यवहार का वर्णन किया।

इसके बाद कुछ जनों ने अपने भावों का प्रकाश किया।

(1) **श्रीमती रेशमा जी अध्यापिका :–** मुझे अपने माता पिता के उपकारी रूप का कोई ज्ञान नहीं था। जब माता पिता कुछ देते तो मेरा स्वार्थ तृप्त होता। मुझे अब महसूस हुआ है कि मैंने भी कुछ देना है, उनका ऋण उतारना है। सतगुरू की कृपा से अब मैं उन्हें भेट देती हूँ। मेरे सतगुरू ने मुझे माता पिता का सम्मान करने के योग्य बनाया है। अब मैं माता पिता से कुछ लेकर नहीं देकर खुश होती हूं। ऐसे सत्गुरू का

कैसे धन्यवाद करू, जिन्होंने मेरे हृदय में यह उच्च परिवर्तन पैदा किया है।

श्रीमान मेहर सिंह जी :- उन्होंने बताया कि मेरे पिता ईमानदारी की मूरत थे। वह कहा करते थे पिरथी सिंह मर तो सकता है, पर किसी का नुकसान नहीं कर सकता। ऐसे फरिश्ता पिता का रूप गुरू महाराज ने दिखाया। एक महीना उसकी सेवा करने का भी सौभाग्य मिल गया। जब विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी ने हमारे घर सभा कराई, तो हम दोनों भाईयों ने माता पिता के गले में हार डाले और उनका सन्मान किया, मेरे पिता ने कहा कि मैं सुना करता था कि देव समाज में बच्चों को माता पिता का सन्मान करना सिखाया जाता है। बच्चे माता पिता के गले में फूलों के हार डालते हैं, आज श्रीमान जी ने यह क्रिश्मा हमारे घर में कर दिखाया है। मैं तो अब सेवक बन नहीं सकता, पर चाहता हूं कि मेरा बेटा सब सम्बन्धियों को देव समाज के साथ जोड़े।

श्रीमान जगीर सिंह जी :- श्रीमान जी ने अपने पिता के गुणों का वर्णन किया कि पिता के सम्बन्ध में एक बहुत बड़ा अपराध याद आकर दुखी करता है। पिता जी चाहते थे कि सिरसा से उनके गांव तक मैं कार द्वारा उन्हें लाऊं, पर मैं उन्हें थ्री व्हीलर में लेकर आया, जिससे उन्हें बहुत तकलीफ हुई, वह कहते रहे मैं बहुत दुखी हूं, परन्तु मैंने अपनी मर्ज़ी की। आज दुखी हूं, काश! मैं इसका परिशोध कर सकूं। माता के चरण धोए हैं, पर चरर्णामृत नहीं ले सका, इसका भी पछतावा है। माता जी मेरी धर्म पत्नी और मेरी भावजा से बहुत प्यार करती थी, उनको अपनी बेटियां मानती थी। ऐसे माता-पिता का मिलना बहुत बड़ा सौभाग्य है।

श्रीमान चन्द सिंह जी :- मैं श्रीमान बलदेव सिंह जी का धन्यवादी हूं, जो ऐसे सुन्दर वातावरण में मुझे लेकर आए।

फिर सौभाग्यवान बच्चों ने अपने माता-पिता के गलों में हार डालकर उनके चरणों में सिर रखकर प्रणाम किया, माता-पिता ने उन्हें शुभ आर्शीवाद दिया। बहुत ही स्वर्गीय दृश्य पैदा हुआ।

कई जनों ने खुशी खुशी इस उत्सव पर दान दिया फिर देव आरती का गान करके, जय ध्वनि के साथ इस उत्सव की समाप्ति हुई। सहायकारियों की बहुत सहायता महसूस होती रही।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

जीवन प्रसंग

खुद का बख़ान करने पर पुण्य घट जाते हैं

इस heading से प० विजयशंकर मेहता ने "जीने की राह" के कालम में लिखा था कि दूसरे के मुंह से अपनी तारीफ सुनकर सबको अच्छा लगता है। लेकिन अपने मुंह से तारीफ करना हमारे अहंकार को दर्शाता है। इससे हम स्वयं को बहुत हानि पहुंचती है। पुण्य का अर्थ है अच्छे कर्मों का परिणाम, उनकी पोज़ेटिव एनर्जी। यदि आपने अच्छे काम दिए हैं तो उन कामों का बख़ान कभी न करें, यदि वह काम सचमुच अच्छे हैं तो लोग स्वयं उसका बख़ान करेंगे। अच्छे काम करें परन्तु उसका प्रदर्शन बिल्कुल न करें। उद्देश्य सिर्फ यही है कि हम यह जान और सीख सकें कि हमने अच्छे काम तो करने हैं परन्तु उनके फज़ूल प्रदर्शन से बचना है।

सर्दी के मौसम में भी ज्यादा पानी पीना जरूरी है।

गर्मी के दिनों में पानी पीने के लिए कोई अलार्म नहीं लगाना पड़ता। गर्मी के मौसम में आपका शरीर ही खुद पानी मांग लेता है। लेकिन ठंड के दिनों में ऐसा नहीं होता। चूंकि आपको पसीना नहीं निकलता, इसलिए आपका शरीर भी पानी नहीं मांगता। परिणामस्वरूप हम सर्दी के मौसम में पानी की मात्रा कम कर देते हैं। शरीर पानी न मांगे, तो इसका मतलब यह नहीं होता कि आपके शरीर को पानी की जरूरत भी नहीं है। सर्दी के मौसम में भी पर्याप्त पानी पीना क्यों जरूरी हैं, आइए जानते है :

वजह 1 : त्वचा को सूखेपन से बचाने के लिए सर्दियों के दिनों में मौसम अन्य दिनों की तुलना से ज्यादा शुष्क होता है। इसके अलावा जब आप अपेक्षाकृत गर्म कमरे से बाहर ठंडे वातावरण में जाते हैं तो बाहर बहने वाली ठंडी अवा से आपकी त्वचा रूखी–सूखी हो जाती है। सर्दियों के दिनों में कई लोगों की त्वचा छिलने भी लगती है। त्वचा संबंधी और समस्याएं भी होती हैं। इसलिए त्वचा स्वस्थ, नमीयुक्त और चमकदार बनी रहे, इसके लिए तो सर्दियों में नियत अंतराल में और भी ज्यादा पानी पीने की जरूरत है।

वजह 2 : विंटर डिइाइड्रेशन का सामना करने के लिए : गर्मी कें दिनों में थोड़ा–सा भी काम करने या धूप में निकलने पर पसीना काफी तेजी से निकलता है। तेजी से एक साथ पसीना निकलने से हमें पानी की जरूरत ज्यादा महसूस होती है। इससे हम पानी पीने को प्रेरित होते हैं। लेकिन सर्दी के दिनों में पसीना तेजी से बाहर नहीं निकलता, बल्कि धीरे–धीरे निकलता है। इसलिए हमारा शरीर एकदम डिहाइड्रेट हो जाता है और डिहाईड्रेशन के तमाम नुकसान भी हो जाते हैं। इसलिए सर्दियों के दिनों में भी उतना ही पानी पीना जरूरी है, जितना गर्मियों के दिनों में हम पीते हैं।

वजह 3 : कैफीन का मुकाबला करने के लिए: सर्दियों में अधिकांश लोगों का चाय–कॉफी यानी कैफीन का इनटेक बढ़ जाता है। यह सर्वाविदित तथ्य है कि हम जितनी ज्यादा चाय–कॉफी पिएंगे, शरीर में डिहाइड्रेशन भी उतना ही अधिक होगा। कई लोग ज्यादा एनर्जी के लिए चाय–कॉफी पीते हैं, लेकिन डिहाइड्रेशन होने से उसका उलटा असर हो जाता है। इसलिए हम कैफीन को संतुलित करने के लिए हमें ज्यादा पानी पीना होगा। इसका सीधा–सा हिसाब यह है कि अगर एक कप चाय–कॉफी पी रहे हैं, तो उसके 10 मिनट पहले अतिरिक्त दो कप की मात्रा के

बराबर पानी पिएं।

वजह 4 : बढ़ते वजन को संतुलित करने के लिए : ऐसा माना जाता है कि सर्दियों के मौसम में भूख अन्य मौसम की तुलना में ज्यादा लगती है। इसलिए इस मौसम में अक्सर वजन बढ़ने की समस्या भी होती है। लेकिन एक तथ्य यह भी है कि चूंकि सर्दियों के मौसम में हम पानी कम पीते हैं, इसीलिए भी हम ओवरईटिंन्ग कर लेते हैं। अगर आप पर्याप्त पानी पीना जारी रखेंगे तो उतना ही खाएंगे जितनी कि शरीर को जरूरत होगी। पर्याप्त पानी पीने से हमारा पाचन तंत्र भी अच्छी तरह से काम करता है और मेटाबॉलिज्म भी बेहतर बना रहता है, जिससे हमारा वजन संतुलित बना रहता है। तो अगर चाहते हैं कि सर्दियों में वज़न ना बढ़े तो पर्याप्त पानी पिएं।

वजह 5 : प्रतिरक्षा प्रणाली की मजबूती के लिए : हम जितना डिहाईड्रेटेट रहेंगे, यानी जितना कम पानी पिएंगे, हमारा प्रतिरक्षा तंत्र (इम्युनिटी सिस्टम) उतना ही कमजोर बनेगा। सर्दी के मौसम की शुरुआत में जैसे ही हमारा वॉटर इनटेक कम होता है, प्रतिरक्षा तंत्र के कमज़ोर पड़ने की वजह से हम सर्दी–ज़ुकाम और वायरल फीवर जेसी समस्याओं से परेशान होने लगते है। अगर हम पर्याप्त पानी पिएंगे तो सर्दी–खांसी जैसी कई बीमारियों से बचे रहेंगे। सर्दियों के दिनों में कई लोगों को पैरों में ऐंठन (क्रैम्प) की समस्या भी होती है। इसकी एक वजह पानी की कमी भी होती है।

बीस किलोग्राम की मां

जैसे–तैसे अपने दो बच्चों और राशन को संभालती वो महिला जब बिल काउंटर पर पहुंची तो उसे याद आया कि बटुआ घर ही भूल आई थी। अब एक ही चारा बचा था कि सामान वहीं छोड़ती और खाली हाथ लौट जाती। उसे पसोपेश में दखे बाजू में खड़ी दूसरी औरत ने उसका बिल भरा। वह दूसरी औरत और कोई नहीं बल्कि न्यूज़ीलैंड की प्रधानमंत्री जासिंडा ऑर्डर्न थीं, जासिंडा से जब पूछा गया कि उन्होंने आखिर एक अनजान औरत का बिल क्यों चुकाया तो बड़ी मासूमियत से बोलीं, 'क्योंकि वह एक मां थी।' तो यह है सभ्य समाज में एक मां का दर्जा। उसकी मेहनत, उसकी व्यस्तता, उसकी थकान, उसकी मासूमियत और यहां तक कि उसके भुलक्कड़पन को भी सहजता से लेने वाला समाज। इसके उलट कोल्लम की उस मां की बदकिस्मती देखिए जिसे सिर्फ बीस किलोग्राम बची रह जाने पर पिछले दिनों अस्पताल पहुंचाया गया था। केरल के कोल्लम की तुषारा के आखिरी वक्त में उसके जिस्म के नाम पर हड्डियों का कंकाल भर बचा रह गया था। वह भी दो बच्चों की मां थी, जिन्हें बेसहारा छोड़ जब उसने दुनिया से कूच किया तो बहुत सारे सवाल उस समाज के लिए पीछे छोड़ गई तो खुद को ईश्वर से डरने वाला, नैतिक, पारंपरिक और जाने क्या–क्या कहता आया है।

देश में दहेज से जुड़ी हिंसक वारदातों के चलते हर दिन कम से कम 20 औरतें अपनी जान से हाथ धो बैठती हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरों के आंकड़े बोलते हैं कि भारत में रह साल जितनी औरतों की हत्या की जाती है उनमें 40 से 50 फीसदी दहेज हत्याओं की शिकार होती हैं। घरों के भीतर अपराधों की यह भयावहता दहेज निषेध कानून बनने के 58 साल बाद भी जारी है। जानते हैं तुषारा का अपराध? ससुरालवालों की दहेज की फरमाइशों पर वह खरी नहीं उतरी थी। तो उससे इस अपराध का बदला लेने का सिलसिला शुरू हुआ। उसके खाने–पीने पर बंदिशों के ताले जड़ दिए गए। पिछले कुछ सालों से उसे सिर्फ भीगा चावल और चीनी का घोल दिया जाता रहा था, ताकि बस सांसें कायम रहें।

और यहां हम बातें करते हैं ख्वाहिशों की, सपनों ओर महत्वाकांक्षाओं की जबकि हमारे ही बीच

एक जान ऐसी भी थी जो सालों से बस जान बचाने लायक सांसों पर जिंदा थी! जो सिर्फ ज़िंदा थी, और कुछ भी नहीं थी। आखिर 20 किलो के उसके जिस्म में क्या बाकी रहा होगा? शायद एक मरियल दिल, कराहता जिगर, कुम्हलाए गुर्दे, सिकुड़ी नसों में रेंगते खून के कतरे और..... और शायद अपने ज़िंदा बचे रह जाने के ख्यालों से जूझते कुछ सवाल। और यह घटना है उसी केरल की जहां सौ फीसदी लिटरेसी के आंकड़े सालों से चौंकाते रहे हैं, उसी केरल की जिसके बैकवॉटर्स में इठलाती हाउसबोट और उन पर सवार सैलानियों के दिलफरेब सिलसिलों ने इसे 'गॉड्स ज़ोन कंट्री' बनाया है। इससे तो बेहतर था कि कमतर इंसानों की ज़मीन ही बना रहता केरल। इसांन शायद तुषारा को इंसान से इतना कमजोर जीव तो न बनने देते। उसकी काया से साल-दर-साल रिसता मांस और पीछे छूट गया कंकाल किसी की तो आंखों की किरकिरी बनता, किसी को तो तरस आता या आत्मा तो धिक्कारती..... शायद यह होता, शायद वो होता या शायद कुछ भी न होता.....

संतुष्ट व कृतज्ञ होना ज़रूरी है।

अहं-भरा अधिकार, हर वस्तु, हर रिश्ते पर मेरा हक वाली भावना को दूर रखने के लिए विनम्रता मददगार होती है। हम हवा, पानी, धरती, आसमान सबके लिए प्रकृति का आभार मानते हैं, वैसे ही हमें मिली हर सुविधा के लिए माता-पिता के आभारी हों। इस भाव को बच्चों में विकसित और पोषित करें।

बच्चों में कुछ आदतें छुटपन से ही डालना जरूरी है बच्चों में धैर्य और संतुष्टि की भावना लाने के लिए कुछ बातें हैं, जो बच्चों को सिखाना जरूरी है। इसमें प्रधानता आपके व्यवहार की ही है। इसलिए इन बातों पर पहले ध्यान दें -

अपमान नहीं, समझाइश दें।

बच्चे यदि किसी तरह का अप्रिय व्यवहार करें तो उन्हें उसी वक्त रोकना ज़रूरी है। पर एक बात का ख़्याल रखें कि यहां बच्चे को रोकने से मतलब उसका अपमान करना नहीं है, बल्कि समझाना है। यदि बच्चा ये कहता है कि आपने उसके लिए उसका पसंदीदा खिलौना नहीं लिया या उसे जो खाना था वो नहीं दिलाया तो ऐसे में खिसियाने के बजाए उसे समझाएं कि आपने उसके लिए और भी खिलौने तो लिए हैं या आप हमेशा तो उसे पसंद की चीज़ें खिलाते ही हैं। ऐसे में एक बार उसकी मर्ज़ी का न करने पर, उसे समझाएं कि इस तरह का व्यवहार करना ग़लत है।

सही व्यवहार करना सिखाएं

बच्चों को ये जानना भी ज़रूरी है कि उनके द्वारा किए गए व्यवहार का असर अन्य लोगों पर होता है। इसक लिए उनसे बात करें और बताएं कि उनके द्वारा कहे गए शब्द सामने वाले व्यक्ति को दुख दे सकते हैं। बच्चों को समझाने के लिए उन्हें उनकी तरह के उदाहरण दे सकते हैं, जैसे वे फलां बच्चे को खेलने नहीं ले जाएंगे, तो उसे बुरा लगेगा या अगर कोई खेल कोई बच्चा ढंग से नहीं खेलता, तो उसे छोड़ देना बच्चे का दिल दुखा सकता है। इस तरह के उदाहरण बच्चों को दूसरों के प्रति ठीक तरह से व्यवहार करने व सहानुभूति के पाठ भी पढ़ाते है।

बहाने न बनाएं

बच्चों को कभी इस बात का अहसास नहीं होता कि उनके पास क्या कुछ है। वे हमेशा इस बात से दुखी रहते हैं कि उनके दोस्त के पास उनसे ज्यादा खिलौने हैं या उसने नई साइकिल ली है। यदि बच्चा आपसे महंगे खिलौने या किसी अन्य चीज़ के लिए ज़िद करता है तो उसे साफ़ शब्दों में न कहने की आदत डालें न कि बहाने बनाएं कि उसे जन्मदिन पर उसकी पसंदीदा चीज़ लाकर देंगे। इसके अलावा आप

उसे कुछ नया खरीदने के लिए उसकी पॉकेट मनी से पैसे बचाने की सलाह भी दे सकते हैं।

आभार जताना सिखाएं

माता-पिता बच्चे के लिए प्रेरणास्त्रोत बनकर इन बातों को सिखा सकते हैं। जैसे उनके पास जो भी है चाहे भोजन हो या सुकून भरा जीवन इसे लेकर वे एक-दूसरे से बात करें। इसके अलावा जो चीज़े सामान्य लगती हैं पर बेहद ज़रूरी हैं जैसे एक-दूसरे को समय देना, साथ घूमने जाना या साथ मिलकर भोजन करने जैसी चीज़ों को लेकर जब आप कृतज्ञ होंगे तो बच्चा भी ये सब चीज़ें समझेगा व सीखेगा।

परवरिश करना सिखाएं

बच्चे को किसी पालतू का ध्यान रखने की जिम्मेदारी दें। साथ ही हर बच्चे को प्रकृति का आभार व्यक्त करना सिखाना ही चाहिए। उसे पौधों में पानी देने, उसके आसपास से सूखे पते हटाने और पौधे को स्वस्थ्य रखने की ज़िम्मेदारी दें। उसे समझाएं कि पालना-पोसना आसान काम नहीं होता, साथ ही कुदरत हमें क्या कुछ नेयमतें देती है, इसकी भी समय-समय पर जानकारी देते रहें।

शुभ संग्राम

कपूरथला रेल कोच फैक्टरी में दो सभाएं

श्रीमान श्रेष्ट सिंह जी की ज़ोरदार प्रार्थना पर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी 29.12.2019 को कपूरथला रेल कोच फैक्टरी में पहुँचे। श्रीमान श्रेष्ट सिंह जी की सत्संग कराने की इच्छा के साथ ही 29.12.2019 को ही कुष्ठ आश्रम में जाकर दान करना चाहते थे । सभा के बाद श्रीमान जी के साथ प्रोग्राम बना। सभा में श्रीमान जी ने बताया कि देवात्मा के देव प्रभावों द्वारा सम्बन्धों में मेल के विशेष दृश्य देखे जाते हैं। नाशुक्रे बेटे, बेटियां माता पिता के लिए सेवाकारी होने लगते हैं। अपनी ग़ल्तियों के लिए उनके चरणों में सिर रखकर क्षमा प्रार्थी होने के लिए मजबूर हो जाते हैं। पति पत्नी का रिश्ता किस क़दर मधुर बन जाता है। कई उदाहरण दिए।

सामाजिक जीवन में देवात्मा कैसे ईमानदार, पवित्र जन बना देते हैं। तहसीलदार साहिब श्रीमान सावन सिंह जी ईमानदारी के कारण फरिश्ता तहसीलदार कहलाए। सभा के बाद कुष्ठ आश्रम में परिवार ने अपनी ओर से बहुत से कपड़े, राशन और मिठाईयों के बड़े बड़े पैकट दान करके अपना भला किया।

दूसरे दिन रेल कोच फैकटरी देखने के बाद 12 बजे फिर सभा की गई। इस सभा में बहुत सुन्दर वातावरण बना, कईं जनों ने श्रीमान जी का फोन नम्बर लिया। श्रीमान श्रेष्ट जी का बेटा जो विदेश में टैक्नीकल विद्या के लिए बाहर जा रहा हैं। उसने विशेष उत्सुकता से सम्बन्ध बनाए रखने का इज़हार किया। श्रीमान जी ने उसे सुचेत किया कि दुनिया में नशों के दरिया बह रहे हैं, मांसाहार का खतरनाक वातावरण है, सैक्स की अश्लीलता के ज़हर नौजवानों के जीवन के लिए घातक परिणाम भी हो सकते हैं। देव समाज के दो सेवकों के उदाहरण दिए गए जो प्रेरणादायक थे। परिवार ने खुश होकर 700 रूपये दान में दिए।

-एक सेवक

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पाठ और विचार विषयक वार्षिक साधनों की तालिका

सन् 2020 ई.

स.	वार्षिक साधनों के विषय	साधन का विषेश दिन	दिन
1.	मात–पिता और सन्तान के सम्बन्ध में व्रत	13 जनवरी	सोमवार
2.	भाई बहनों के सम्बन्ध में व्रत	30 जनवरी	वीरवार
3.	देव समाज उत्सव	17, 18, 19 फरवरी	सोमवार, मंगलवार, बुधवार
4.	पति–पत्नी के सम्बन्ध में व्रत	10 मार्च	मंगलवार
5.	उद्भिद जगत दिवस	25 मार्च	बुधवार
6.	भृत्य स्वामी व्रत	9 अप्रैल	वीरवार
7.	वंशीय जनों के सम्बन्ध में	6 मई	बुधवार
8.	स्वदेश के सम्बन्ध में व्रत	2 जून	मंगलवार
9.	साथी सेवकों के सम्बन्ध में व्रत	4, 5, 6 जुलाई	शनिवार, रविवार, सोमवार
10.	स्वास्तित्व के सम्बन्ध में व्रत	2, 3, 4 अगस्त	रविवार, सोमवार, मंगलवार
11.	पशु जगत के सम्बन्ध में व्रत	26 अगस्त	बुधवार
12.	परलोक के सम्बन्ध में व्रत	17 सितम्बर	वीरवार
13.	स्वजाति के सम्बन्ध में	25 अक्तूबर	रविवार
14.	भौतिक जगत के सम्बन्ध में	14 नवम्बर	शनिवार
15.	मनुष्य मात्र के सम्बन्ध में	30 नवम्बर	सोमवार
16.	परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्म महोत्सव	29, 30, 31 दिसम्बर और पहली जनवरी तक	मंगलवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार

31 दिसम्बर विशेष दिन

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–देव–धर्म–मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts